

विशीर्यत् 5, 1879. गिरिर्वि विशीर्यतः R. GORR. 1, 69, 19. संदेहस्ते व्य-
शीर्यत् KĀND. UP. 5, 13, 2. व्यशीर्यद्वन्धनम् MBH. 14, 1712. व्यशीर्यत श-
रीरात्स्वात्सर्वगात्राणि lösten sich ab R. 1, 25, 12. पुष्पमुच्चावचं भूमौ व्य-
शीर्यत समस्ततः auseinanderfallen HARIV. 3933. सैन्यानि विशीर्यते सैक-
ताः सेतवो यथा Spr. (II) 2943. भिन्नं हि तव (बलं) काष्ठमिव तृणद्वयं वि-
शीर्यते KĀM. NĪTIS. 17, 40. गन्धादेव व्यशीर्यत (गन्धा तथा व्यदीर्यत die
neuere Ausg.) सिंक्ष्येवेतरे मृगाः auseinanderstieben HARIV. 13522.
विशीर्यमाणा पतना BHĀG. P. 6, 11, 2. 10, 63, 17. यन्नावि किंचिद्विशीर्यते
verderben, zu Grunde gehen M. 8, 408. (मनस्वी, कुसुमस्तम्बकः) विशीर्य-
ति वने Spr. (II) 1843. देहे विशीर्यमाणे पुरुषो न विशीर्यते ऽजः BHĀG. P.
2, 7, 49. व्यशीर्यत ततो राष्ट्रं तयैरनानाविधैस्तदा MBH. 1, 3726. तस्य व्य-
शीर्यत्कोशवाहनम् MBH. 14, 75. तमो विशीर्यते मन्त्रम् BHĀG. P. 2, 4, 5.
स्रवत्यनेकतं पूर्वं परस्ताच्च विशीर्यते (ब्रह्म) M. 2, 74. विशीर्यते स्वयं चैव
दैवोपकृताः Spr. 3140. घ्रास्तिक्यं विशीर्यते HARIV. 11316. घर्घ्राः SAR-
VADARĀNAS. 13, 3. — partic. विशीर्या zerbrochen, zerfallen, zerrissen
SUND. 2, 18 (विकीर्या MBH. 1, 7669). MBH. 3, 14332. HARIV. 5596 (वि-
कीर्या die neuere Ausg.). 13512. fg. 13521. R. 3, 32, 20. 33, 51. 53. 58. 67,
14. 4, 7, 23. 21, 37. 5, 4, 9. 87, 4. 6, 3, 51. 81, 26. SUÇR. 1, 38, 3. 99, 10. MĀRĀH.
98, 17. KĀM. NĪTIS. 13, 65. Spr. (II) 4227. RAGH. 16, 11. VARĀH. BRH. S. 80, 15.
104, 63. MĀRĀ. P. 47, 12. BHĀG. P. 1, 9, 38. कुत्ति 3, 13, 29. 19, 26. फल
5, 16, 20. 7, 2, 29. PĀNĒAT. 80, 9. ०मूर्ति zerschmettert, zermalmt KUMĀ-
RAS. 3, 54. वानराः R. 5, 83, 8. RAGH. 12, 51. v. l. रेवाम् — विन्ध्यापादे
विशीर्याम् MEGH. 19. बाष्पेण स्तनतटविशीर्येण zerstoßen Spr. (II) 3965.
आम्नेषविशीर्यचन्दनरजःपुञ्जप्रकर्षं abgerieben 4014. पुरो zerstört BHĀG.
P. 4, 28, 7. 24. रुरा zerrissen R. 3, 58, 86. वल्कलम् — विशीर्यासंकृति
KUMĀRAS. 3, 8. ०पङ्क्ति (पृथ) RAGH. 9, 56. ०प्रतिसंधान Verz. d. Oxf. H.
216, a, 6. ०शीर्यावसन Spr. 2045. KATHĀS. 2, 51. 21, 41. रत्नराशिर्विशीर्या
ऽयम् auseinandergeworfen MBH. 3, 2548. कुञ्जम्भस्य च मार्गेषु विशीर्या-
स्ते मत्कागजाः umherliegend HARIV. 13521. दत्तालि ausgefallen Spr. 4965.
कोश verschleudert, zu Grunde gerichtet MBH. 14, 56. 60. प्रारम्भ zu
Nichte geworden Spr. 2847. — Vgl. उदकेविशीर्या, विशर, विशरणा, वि-
शारणा.

— अभिवि pass. auseinandergerissen werden: (वाक्किनी) साहचरेण श-
तधाभिव्यशीर्यत MBH. 7, 4378.

— निर्वि pass. sich ablösen und auseinanderfallen: भूषणानि मन्ती-
तले । सद्यः खान्निर्व्यशीर्यत नोपास्तारा इवाम्बरात् R. 3, 58, 35.

— प्रवि, partic. ०शीर्या zerfallen, abgefallen: ०मौस सुÇR. 1, 67, 13.

— सम् zusammenbrechen: सं वै गुरुर्भारः प्रपाति AIR. BR. 4, 13. ÇAT.
BR. 1, 1, 18. 2, 1, 4, 26. यदि कर्तं पतित्वा संशये AV. 4, 12, 7. 12, 4, 3. 5.
RV. 6, 54, 7. einen Bogen ĀÇV. GRH. 4, 2, 22. PĀNĒAV. BR. 11, 5, 8. 21,
14, 4. सुसंत्रस्तं बलं ते समशीर्यत auseinanderstieben MBH. 5, 2495. —
Vgl. संशर.

2. शर = आ steden, kochen; davon शरम्, प्रत (partic.), आशिर्, आ-
शिर्, आशीर्त.

3. शर = अयि sich anlehnen u. s. w.; davon शरणा, शरीर, शर्मन्, आ-
शार, शाला:

1. शर् (von 1. शर) m. P. 3, 3, 57, Schol. (parox.). 1) Rohr überh., ins-
bes. Saccharum Sara Romb. (zu Pfeilen verwandt) NĪ. 3, 4. AK. 2, 4,

VII. Theil.

5, 27. H. 1192. an. 2, 459. fg. MED. r. 87. HALĀJ. 2, 36. RV. 1, 191, 3. AV.
1, 2, 1. 3, 1. वि ते मर्दं शर्मिव पातयामसि 4, 7, 4. त्रिप्रं शरं इव भव्यताम्
8, 8, 4. ÇAT. BR. 1, 2, 4, 1. शरपिका 3, 1, 3, 13. ०बर्हिस् 14, 9, 4, 11. TS. 5,
2, 6, 2. 6, 1, 2, 3. KAUC. 47. fg. KĀTJ. ÇR. 25, 7, 17. GRHJAS. 1. 94. M. 8, 247.
R. 2, 96, 44. 52. R. GORR. 2, 30, 13. SUÇR. 1, 27, 20. 33, 12. 96, 13. ०काण्ड
333, 20. ०पाटितपाद KATHĀS. 74, 107. VARĀH. BRH. S. 33, 97. ०तार 34,
113. 93, 5. दर्भशरम् gaṇa गवाश्चादि zu P. 2, 4, 11. ०पाण्डुर RAGH. 14, 26.
०काण्डपाण्डु MĀLAV. 43. ०काण्डपाण्डु ÇIÇ. 11, 30. ०शार R. 4, 39, 14
(vgl. शणगौर MBH. 3, 16350). — 2) Pfeil AK. 2, 8, 2, 55. 3, 4, 1, 2. TRIK.
2, 8, 52. H. 778. H. an. MED. HALĀJ. 2, 308. 311. 3, 5. MUND. UP. 2, 2, 3.
M. 3, 44. धनुःशराणां कर्ता 160. MBH. 3, 12225. 15657. 15731. R. 1, 1, 64.
शरमुद्धृत्य 2, 63, 22. MEGH. 49. RAGH. 1, 61. शरं निषङ्गाडुर्द्धृत्य 2, 30, 3, 56.
VARĀH. BRH. S. 26, 9. 38, 33. DUŪRTAS. 66, 11. PĀNĒAT. 224, 11. HIT. 34,
20. स्मर 39, 22. KATHĀS. 4, 8. वाक्शराः R. 2, 33, 3. am Ende eines adj.
comp. (f. घ्रा) KATHĀS. 39, 170. करिष्यमाणः सशरं शरासनम् RAGH. 3, 52.
— 3) Bez. der Zahl fünf (wegen der fünf Pfeile des Liebesgottes) WE-
BER, Nax. 2, 382. VARĀH. BRH. S. 8, 20. GANĪT. MADHJAM. 3. SĀH. D. 264;
vgl. शरणि 2). — 4) sinus versus COLEBR. Alg. 89. GANĪT. TRIPRAÇN. 58
nebst Comm. GOLĀDH. GOLAB. 16. GRAHAṆAV. 29. DRK. 10. GANĪT. GRA-
HAĀKĀ. 2. Bei ĀRJABHĀTA 2, 17 sowohl sinus versus, als auch der ganze
Durchmesser nach Abzug des sinus versus. — 5) Bez. einer best. Con-
stellation, wenn nämlich alle Planeten in den Häusern 4, 5, 6 und 7
stehen, VARĀH. BRH. 12, 15. — 6) N. pr. eines Mannes RV. 1, 116, 22. 8,
59, 13. fg. eines Asura HARIV. 217 (nach der Lesart der neueren Ausg.
st. प्रक der älteren). 2288. — Vgl. कुं, कुसुमं, पञ्चं, पर्णं, पुष्पं,
भीमं, मत्कां, रामं, स्थूलं, हरिं.

2. शर m. = शरम् Rahm H. an. 2, 459. fg. MED. r. 87. सर RATNAM.
im ÇKDR. — Vgl. शीरं.

3. शर n. Wasser H. an. 2, 459. MED. r. 87.

शरकं adj. von 1. शर gaṇa स्रष्ट्यादि zu P. 4, 2, 80.

शरकार (1. शर + 1. कार) m. Verfertiger von Pfeilen SĀH. D. 104, 17.

शरकुण्डेश्य adj. in einer mit Rohr (शर) überdeckten Grube (कुण्ड)
ruhend (शय): घग्नि R. 7, 31, 8.

शरकूप (1. शर + कूप) m. N. pr. eines Brunnens (entstanden durch
einen in die Erde eingedrungenen Pfeil) LALIT. ed. Calc. 178, 2. HIOUEN-
THSANG 1, 322.

शरगुल्म (1. शर + गुं) m. 1) Röhricht MBH. 13, 4204. — 2) N. pr.
eines Affen R. 4, 41, 3.

शरचन्द्र (शरद् + चन्द्र) m. Herbstmond ÇĀK. 145. VER. in LA. (III) 1.
16. परिपातं Vollmond im Herbst Spr. 2789. परिपातशरचन्द्रिकासु त-
पासु MEGH. 109.

शरच्छिन् (शरद् + शिं) m. dass. BHĀG. P. 3, 2, 34.

शरच्छालि (शरद् + शालि) m. im Herbst reifender Reis RĀĀA-TAN. 2,
18. 3, 269.

शरच्छिन् (शरद् + शिं) m. ein Pfau im Herbst: ist stumm
MBH. 12, 4357.

1. शरज (1. शर + 1. ज) adj. = शरज in einem Röhricht geboren P. 6, 3, 16.

2. शरज (2. शर + 1. ज) n. Butter H. 407.

6*